उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर आधारित पाठ्यक्रम, (सत्र 2026–27 से प्रभावी)

क्षमता संवर्धन पाठ्यक्रम

शास्त्री प्रथम वर्ष, प्रथम सेमेस्टर

पत्र – कुमाउँनी व्याकरण (कोड: AEC – 1)

क्रेडिट: 02 पूर्णांक: 100

पाठ्यक्रम उद्देश्य :–

इस पाठ्यक्रम को प्रारंभ करने के उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- छात्रों को कुमाउँनी व्याकारण का ज्ञान उपलब्ध करवाने के लिए।
- कुमाउँनी के मानकीकरण संबंधित जानकारी के लिए।
- कुमाउँनी वाक्य निमार्ण के समुचित अध्ययन के लिए।

इकाई	**पाठ्य विषयक/विवरण**
1	• कुमाउँनी का व्याकरणिक स्वरूप: वर्णमाला, उच्चारण, वर्तनी। • स्वर ध्वनियाँ: कुमाउँनी की स्वर ध्वनियाँ, अनुनासिक और अनुस्वार, स्वर संयोग, अर्धस्वर, स्वरों की उत्पत्ति, स्वर परिवर्तन के कारण रूप। • कुमाउँनी की व्यंजन ध्वनियाँ: उत्पत्ति, परिवर्तन के रूप एवं विपर्यय।
2	• कुमाउँनी का शब्दकोश: तद्भव, तत्सम, विदेशी, पर्यायवाची, विलोम, समानार्थी, अनेकार्थी शब्द। • कुमाउँनी का भाषिक स्वरूप: शब्द रचना (उपसर्ग, प्रत्यय, समास, संधि), शब्द विचार: शब्द और पद, कुमाउँनी शब्दों में रूप रचना। • कुमाउँनी वाक्य: परिभाषा, भेद, प्रकार।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम :–

1. व्याकरण संबंधित नियमों का ज्ञान होगा।
2. कुमाउँनी व्याकरण की बारीकियों को समझेंगे।
3. कुमाउँनी शब्दों का प्रयोग करेंगे।
4. वाक्य विश्लेषण तथा कुमाउँनी शब्दों का संश्लेषण कर पाएँगे।

संदर्भ सूची

1. कुमाऊँ का इतिहास – बद्री दत्त पांडे
2. कुमाउँनी भाषा अध्ययन – डॉ. भवानी दत्त उप्रेती
3. कुमाउँनी भाषा और उसका साहित्य – डॉ. त्रिलोचन पांडे
4. कुमाउँनी शब्द संरचना – प्रो. देव सिंह पोखरिया
5. कुमाउँनी शब्द संरचना – डॉ. चन्द्रशेखर पाठक

उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर आधारित पाठ्यक्रम, (सत्र 2026–27 से प्रभावी)

क्षमता संवर्धन पाठ्यक्रम

शास्त्री प्रथम वर्ष, द्वितीय सेमेस्टर

पत्र – कुमाउँनी का इतिहास और साहित्य (कोड: AEC – 2)

क्रेडिट : 02 पूर्णांक : 100

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :–

1. कुमाउँनी की शब्द सीमाओं को समझेंगे।
2. कुमाउँनी साहित्य का इतिहास और काल विभाजन के संदर्भ में।
3. कुमाउँनी की सहायक बोलियों से अवगत होंगे।
4. कुमाउँनी की समझ विकसित होगी।

इकाई	**पाठ्य विषयक / विवरण**
1	• कुमाउँनी शब्द की व्युत्पत्ति, विभिन्न मत • कुमाउँनी की पृष्ठभूमि: ऐतिहासिक, धार्मिक, भौगोलिक, सामाजिक पृष्ठभूमि एवं कुमाउँनी भाषी क्षेत्र। • कुमाउँनी की विविध बोलियाँ: कुमाउँनी बोलियों का सामान्य परिचय, भाषिक विशेषताएँ।
2	• कुमाउँनी का उद्भव एवं विकास • कुमाउँनी साहित्य का इतिहास और काल विभाजन, प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं विशिष्ट रचनाकार • कुमाउँनी सृजनात्मक साहित्य

पाठ्य अधिगम परिणाम :–

1. कुमाउँनी भाषा के इतिहास का ज्ञान होगा।
2. कुमाउँनी साहित्य के इतिहास को समझेंगे।
3. कुमाउँनी साहित्य और बोलियों को उदाहरण के रूप में प्रयोग करेंगे।
4. कुमाउँनी साहित्य का विश्लेषण एवं संश्लेषण कर पाएँगे।
5. कुमाउँनी भाषा के इतिहास और साहित्य का मूल्यांकन करेंगे।

संदर्भ सूची :–

1. कुमाउँनी भाषा और उसका साहित्य – डॉ. त्रिलोचन पांडे
2. कुमाऊँ का इतिहास – बद्रीदत्त पांडे
3. जनपदीय भाषा साहित्य – डॉ. शेर सिंह बिष्ट
4. कुमाउँनी भाषा एवं संस्कृति – डॉ. केशवदत्त रुवाली

उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर आधारित पाठ्यक्रम, (सत्र 2026–27 से प्रभावी)

क्षमता संवर्धन पाठ्यक्रम

शास्त्री द्वितीय वर्ष, तृतीय सेमेस्टर

पत्र – अनुवाद – कुमाउँनी अनुवाद लेखन का अभ्यास (AEC – 3)

क्रेडिट: 02 पूर्णांक: 100

पाठ्यक्रम के उद्देश्य:-

- अनुवाद प्रक्रिया के ध्यान देने योग्य तत्वों को समझाना।
- कुमाउँनी में अनुवाद का अभ्यास कराना।
- अनुवाद कार्य करते समय आने वाली समस्याओं को समझना।

इकाई	**पाठ्य विषयक/विवरण**
1	• अनुवाद: अर्थ एवं परिभाषाएँ • अनुवाद का स्वरूप: अनुवाद कला, विज्ञान अथवा शिल्प • अनुवाद की प्रकृति, उपयोगिता एवं आवश्यकता • कुमाउँनी में अनुवाद परंपरा
2	• अनुवाद की प्रक्रिया, प्रकार व समस्याएँ • अनुवादक के गुण • कुमाउँनी का व्यावहारिक अनुवाद • अनुवाद की इकाई: शब्द, पदबंध, पाठ

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम :–

1. अनुवाद का अर्थ, स्वरूप और प्रकारों का ज्ञान होगा।
2. अनुवाद की प्रकृति, उपयोगिता एवं आवश्यकता को समझेंगे।
3. कुमाउँनी में अनुवाद को दैनिक व्यवहार में प्रयोग करेंगे।
4. कुमाउँनी में व्यावहारिक अनुवाद का मूल्यांकन कर पाएँगे।

संदर्भ सूची :–

1. कुमाउँनी भाषा का उद्भव एवं विकास तथा उसका भाषिक अध्ययन – प्रो. देव सिंह पोखरिया
2. हिंदी की सहभाषा कुमाउँनी – डॉ. शेर सिंह बिष्ट
3. कुमाउँनी शब्दकोश – पालीवाल
4. कुमाउँनी भाषा के विविध आयाम – अनिल कार्की
5. कुमाउँनी का लोक साहित्य – डॉ. त्रिलोचन पांडे
6. अनुवाद और अनुप्रयोग – प्रो. दिनेश चमोला "शैलेश"

उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर आधारित पाठ्यक्रम, (सत्र 2026–27 से प्रभावी)

क्षमता संवर्धन पाठ्यक्रम

शास्त्री द्वितीय वर्ष, चतुर्थ सेमेस्टर

पत्र – कुमाउँनी लोक साहित्य (AEC – 4)

क्रेडिट: 02 पूर्णांक: 100

पाठ्यक्रम उद्देश्य :–

- इस पाठ्यक्रम को प्रारंभ करने के उद्देश्य निम्नलिखित हैं ।
- लोक साहित्य के विस्तृत अध्ययन के लिए।
- कुमाउँनी क्षेत्र में प्रचलित लोकोक्ति, कहावतें और मुहावरों के गहन अध्ययन के लिए।
- कुमाउँनी लोक साहित्य के स्वरूप, इतिहास और उसकी विधाओं को समझने के लिए।

इकाई	**पाठ्य विषयक/विवरण**
1	• लोक साहित्य: अर्थ और स्वरूप • कुमाउँनी लोक साहित्य का उद्भव एवं विकास • कुमाउँनी लोक साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ • कुमाउँनी लोक साहित्य का वर्गीकरण
2	• कुमाउँनी लोकगीत: स्वरूप एवं वर्गीकरण • कुमाउँनी लोकगाथा: स्वरूप एवं वर्गीकरण • कुमाउँनी लोककथा: इतिहास एवं स्वरूप • कुमाउँनी लोक साहित्य का स्वरूप एवं संभावनाएँ

पाठ्य अधिगम परिणाम :–

1. कुमाउँनी साहित्य का ज्ञान होगा।
2. लोक साहित्य का अर्थ, स्वरूप और प्रवृत्ति समझेंगे।
3. लोक साहित्य का विश्लेषण, संश्लेषण कर पाएँगे।
4. कुमाउँनी लोक साहित्य का स्वरूप एवं संभावनाओं का मूल्यांकन करेंगे।

संदर्भ सूची :–

1. उत्तराखंड का लोक जीवन एवं लोक संस्कृति प्रो–डी.डी. शर्मा
2. कुमाउँनी लोक साहित्य की पृष्ठभूमि – त्रिलोचन पांडे
3. कुमाउँनी भाषा, साहित्य और संस्कृति – प्रो. देव सिंह पोखरिया
4. कुमाउँनी भाषा और संस्कृति – केशवदत्त रुवाली
5. कुमाउँनी लोक साहित्य (संस्कृति, भाषा एवं साहित्य) – पुष्पालता भट्ट